International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में अभिव्यक्त राष्ट्रवादी चेतना का एक अध्ययन

Aditya Kumar Mishra, Research Scholar,

Dept. of Hindi, Himalayan Garhwal University

Dr. Charu Yadav, Assistant Professor,

Dept. of Hindi, Himalayan Garhwal University

सार

जयशंकर प्रसाद जैसे कवि को पढ़ने का अर्थ है कवि को समग्रता में पढ़ना। उनकी काव्यानुभूति, विचारधारा और भावबोध की विशेषताओं के साथ ही आपावाद–युग की विशेषताओं के संदर्भ में प्रसाद के महत्व को समझते हुए पढ़ना। इस अध्ययन को सार्थकता आपके लिए तभी हो सकती है, जब आपको लगे कि आप सीधे प्रसाद के काव्य–मर्म तक पहुँच रहे हैं। यह अध्ययन तभी सार्थक हो सकता है जब आप प्रसाद को पढ़ते हुए अनुभव करें कि प्रसाद आपके कवि हैं। प्रसाद का पाठ अब आपके लिए अपना पाठ है। प्रसाद छायावाद के कवि हैं इसलिए स्वाभाविक है कि छायावाद की प्रवृत्तियों का परिचय प्रसाद को पढ़ने–समझने में सहायक हो। पर यह अध्ययन अधिक सार्थक तभी होगा जब हम प्रसाद को पढ़ते–पढ़ते कुछ नयी विशेषताओं, सूक्ष्मताओं को जानने–समझने में अपने को सक्षम पा रहे हों। विचार करना चाहिए कि प्रसाद छायावादी कवि के रूप में क्या कुछ नया उद्घाटित कर रहे थे, क्या कुछ नया खोज रहे थे। अधिक संभव यही लगता है कि प्रसाद छायावाद की बहुत–सी विशेषताओं की नींव रख रहे थे। हम आरंभ में ही प्रसाद के कुछ विचार–सूत्रों तथा विशिष्ट काव्यानुभवों की ओर संकेत करेंगे। इन संकेतों से शायद आप प्रसाद की कविता के प्रति गहरी उत्सुकता अनुभव करें।

मुख्य शब्दः छायावाद, काव्य–मर्म, विचारधारा, समग्रता, अध्ययन

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी–साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों में जयशंकर प्रसाद अग्रगण्य है, मूर्धन्य कवि होने के साथ प्रसादजी ने गद्य में भी लेखनी चलाकर नाटकों के क्षेत्र में युगांतर स्थापित कर दिया। अभी तक जो भी नाटक लिखे गये उनमें राष्ट्रीयता तो थी, किन्तु प्रसाद जी के नाटकों में अधिक परिमाण में है। सबसे पहले हिंदी साहित्य में भारतेंदु जी ने और बाद में प्रसाद जी ने नवीन प्रयोग किये। उन्होंने राष्ट्रीयता को नाटक का मुख्य तत्व मानते हुए भारतीय इतिहास के गौरवमय अतीत से कथानक लेकर नाटकों का प्रणयन किया जो हर दृष्टि से अद्भुत है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

राष्ट्र एक ऐसी चेतना है जो मनुष्य में इच्छा शक्ति और संवेदना उत्पन्न होती है।

चेतना अवलोकन ही नहीं उनकी परख तथा मूल्यांकन भी करती है। राष्ट्रीयता के निर्माण में मुख्य रूप से भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता विद्यमान रहती है और इसका स्थूल और सुदृढ़ आधार देश की भूमि ही है। हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का जो स्वरूप हमारे सामने है। वह आधुनिक युग की देन है।

भारतेन्दु जैसे जागरूक साहित्य चेता के युग में साहित्य की विभिन्न विधाओं द्वारा राष्ट्रीयता का बीजारोपण हो चुका था, प्रसाद ने इसे सशक्त एवं पुष्ट रूप से आगे बढ़ाया और इसका आधार ऐतिहासिक नाटकों को बनाया। प्रसाद काल तक राष्ट्रीयता के विभिन्न पक्षों में जागरूकता आ चुकी थी, जिनको प्रसाद ने नाटकों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। इस काल का साहित्य आशा, कर्म, जीवन, जागृति, बल ओर बलिदान की आकांक्षाओं से ओत–प्रोत है। नाटकों में राष्ट्र की दुर्बलताओं के प्रति क्षोभ और आक्रोश की भावना होते हुए भी शोषक और अत्याचारी शासन के प्रति प्रतिहिंसा अथवा उग्रता के भाव नहीं हैं। राष्ट्रीयता की वाणी सौम्य है।

स्वदेश–प्रेम राष्ट्रीयता का अनिवार्य तत्त्व है। इस काल के नाटकों में देश की भौगोलिक एकता, प्राकृतिक सुषमा तथा मातृभूमि के प्रति भक्ति की भावना अभिव्यंजित हुई है। प्रसाद के नाटकों में अनन्य देशभक्ति के उदाहरण प्राप्त होते हैं।'चन्द्रगुप्त' नाटक में देशक्ति की सबसे प्रखर ध्वनि सुनाई पड़ती है।

इस नाटक में सिंहरण अलका से कहता है कि जन्मभूमि के लिए ही जीवन है।''अलका देश के प्रत्येक अणु–परमाणु से अगाध ममत्व रखती है। ''मेरे देश हैं, मेरे पहाड़ हैं, मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल हैं। इस भूमि के एक–एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक–एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं के बने हैं।'

रसाद जी ने अपने नाटकों में प्रेम–भावना के साथ–साथ अतीत के गौरवगान द्वारा देशवासियों के प्रति प्रेम उत्पन्न करके लगातार संघर्ष की भूमिका बाँध दी है।

जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'चन्द्रगुप्त' के प्रसिद्ध गीत 'अरुण यह मधुमय देश हमारा, जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' में देश के प्रति आत्मभाव को ही अभिव्यक्ति मिली है।

राष्ट्रीयता का एक पक्ष है अपने अतीत की स्मृति। अतीत की स्मृति आत्मस्मृति है। आत्मस्मरण जीवन है और आत्मविस्मृति मृत्यु। निर्मल वर्मा ठीक ही लिखते हैं कि कोई भी जाति संकट की घड़ी में अपने अतीत, अपनी जड़ों को टटोलती है। संकट की घड़ी आत्ममंथन की घड़ी है और सही आत्ममंथन हमेशा अतीत में लिये गये फैसलों के आसपास होता है...। जिस तरह एक व्यक्ति अपनी स्मृति में दुनिया को परखता है, उसी तरह एक जाति अपनी परम्परा की आंखों से यथार्थ को छानती है। जो लोग अतीत की स्मृति या अतीत के मूल्यांकन को अतीत के प्रति सम्मोहन का दर्जा देते हैं, निर्मल वर्मा उसका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रत्याख्यान करते हैं– 'अतीत का बोध अतीत के प्रति सम्मोहन से बहुत भिन्न है। विगत के प्रति सम्मोहन उसी समय होता है जब हम परम्परा से विगलित हो जाते हैं... परम्परा का रिश्ता स्मृति से है सम्मोहन से नहीं।'

जयशंकर प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' और 'स्कंदगुप्त' नाटक में स्वर्णिम अतीत को वर्तमान के लिए प्रेरणाप्रद बताया है। प्रसाद की निम्नांकित पंक्तियां गौरवपूर्ण अतीत की याद दिलाती हैं और वर्तमान में प्रेरणा भी देती हैं–

वही है रक्त वही है देह वही साहस वैसा ही ज्ञान।
वही है शांति वही है शक्ति वही हम दिव्य आर्य संतान।।
जियें तो सदा उसी के लिए यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

अपनी संस्कृति के प्रति गौरवबोध वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता का हिस्सा है और राष्ट्रीय अस्मिता राष्ट्रबोध का अभिन्न हिस्सा है।

जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'चन्द्रगुप्त' के प्रसिद्ध गीत 'अरुण यह मधुमय देश हमारा जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' में देश के प्रति आत्मभाव को ही अभिव्यक्ति मिली है।

इसी प्रकार... हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!
असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह–सी
सपूत मातृभूमि के– रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो – बढ़े चलो, बढ़े चलो!

कवि द्वारा स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानों एक सोये हुए देश को जागने की प्रेरणा दी जा रही थी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वैदिक काल से ही राष्ट्र शब्द का प्रयोग होता रहा है। राष्ट्र की परिभाषायें समय–समय पर बदलती रही हैं, किन्तु राष्ट्र और राष्ट्रीयता का भाव गुलामी के दौरान अधिक पनपा। जो साहित्य के माध्यम से हमारे समक्ष आया जिसके द्वारा राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ।

साहित्य का मनुष्य से शाश्वत संबंध है। साहित्य सामुदायिक विकास में सहायक होता है और सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अंग है। समाज का राष्ट्र से बहुत गहरा और सीधा संबंध है। संस्कारित समाज की अपनी एक विशिष्ट जीवन शैली होती है। जिसका संबंध सीधा राष्ट्र से होता है जो इस रूप में सीधे समाज को प्रभावित करती है.

प्रसाद जी ने अपने नाटकों के द्वारा भारत के गौरवशाली युगों को सजीव प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, जिससे कि भारतवासियों में आत्मगौरव की भावना का संचार हो सके।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में नारियों की सहभागिता सुनिश्चित करने और राजनीतिक सक्रियता लाने हेतु महात्मा गांधी की भांति नाटककार जयशंकर प्रसाद ने यह स्पष्ट किया है कि नारियों को घर की चार दीवारी से बाहर लाना आवश्यक हैं। उन्होंने अपने नाटकों में आग से खेलने वाली राजनीतिक सूझबूझ से सम्पन्न अनेक नारियों का चित्रण किया है। चन्द्रगुप्त नाटक की 'अलका' वीर क्षत्राणी बनकर अपने स्वतंत्र नारी व्यक्तित्व का परिचय देती हैं। चन्द्रगुप्त और चाणक्य के साथ मिलकर देश की रक्षा के लिये वह नटी का रूप धारण करती है, पर्वतेश्वर के बंदीगृह में चाणक्य से संकेत पाकर वह पर्वतेश्वर की प्रणयिनी बनने की राजनीति खेलती है।

नाटककार प्रसाद के नाटकों का मूल उद्देश्य सांस्कृतिक चेतना जागृत करना, नारी अस्मिता को स्थापित करना और राष्ट्रीय भावनाओं को जन–जन तक पहुँचाना रहा है । भारतेन्दुकालीन नाटकों में देश की दुर्दशा का 'भारत–दुर्दशा' आदि नाटकों में सर्वांगीएर चित्रण किया गया था। गुप्तकाल भारतीय इतिहास का सर्वश्रेष्ठ काल है। प्रसाद ने इसी पर अपनी दृष्टि जमाई और संयोग की बात है कि उस काल के राजवंशों के आंतरिक विग्रह तथा उन पर विदेशियों के आक्रमण की योजनाओं ने अप्रत्यक्ष रूप से हिन्दू–मुस्लिम वैमनस्य और अंग्रेजों की गुलामी से पीड़ित भारत की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर दिया।''

प्रसाद के नाटकों में सांकेतिक भाषा में विदेशी शासन की पक्षपातपूर्ण कुटिल तथा दमनकारी नीति से मुक्ति पाने की प्रेरणा दी गई है। 'स्कंदगुप्त' में राजनीति दुरावस्था का व्यापक स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। मातृगृप्त हुणों के अत्याचारों से दुःखी होकर मुद्गल से कहता है – ''नहीं मुद्गल निरीह प्रजा का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नाश नहीं देखा जाता। क्या इनकी उत्पत्ति का यही उद्देश्य था? क्या इनका जीवन केवल चींटियों के समान किसी की हिंसा पूर्ण करने के लिए है।''

'विशाख' में राजा नरदेव ब्रिटिश शासन का प्रतीक है। इस नाटक में उस समय की परिस्थितियों का सांकेतिक रूप से वर्णन है। जब गांधी जी का, राजनीतिक मंच पर आगमन हो चुका था और जनता जलियाँवाला बाग जैसी दुर्घटनाओं से अंग्रेजों की नीयत पहचानकर अत्यन्त क्षुब्ध थी। नरदेव की रानी अन्यायी शासन से दुःखी है, वह नरदेव से आग्रह करती है – ''आपने कुपथ पर पैर रखा है और मैं आपको बचा न सकी। परिणाम बड़ा ही भयंकर होने वाला है। वह मैं नहीं देखना चाहती, किन्तु मैं कहे जाती हूँ कि अन्याय का राज्य बालू की भीत है।''

विलास के चरित्र से अंग्रेजी सत्ता और उसके कुकृत्यों को प्रसाद ने देखा कि भारत की जनता को पराधीनता खल रही थी, जिसका विरोध उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से मनोवृत्तियों के संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया। 'कामना' राजनीतिक अत्याचारों से दुःखी होकर कहती है–यदि राजकीय शासन का अर्थ हत्या और अत्याचार है, तो मैं व्यर्थ रानी बनना नहीं चाहती। मेरी प्रजा इस बर्बरता से जितना शीघ्र छुट्टी पाये उतना ही अच्छा है।

उन्होंने पारंपरिक मान्यताओं से पृथक राष्ट्रवादी सिद्धांतों की व्याख्या की हैं। नाटकों के नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने व्यापक रूप में राष्ट्रीय चेतना का संदेश दिया हैं। उनके सभी प्रमुख नाटकों में नारी के गौरवमय राष्ट्रीय स्वरूप के भव्य दर्शन होते हैं। 'चन्द्रगुप्त' नाटक की नारी पात्र 'अलका' सिल्यूकस के समक्ष अपने राष्ट्र प्रेम का परिचय देती हुई कहती है कि 'मेरा देश है, मेरे पहाड़ हैं, मेरी नदियाँ और जंगल हैं, इस भूमि के एक–एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक–एक क्षुद्र अंश उन्हीं परमाणुओं से बने हैं।' 'स्कंदगुप्त' की जयमाला 'अजातशत्रु' की मल्लिका, 'चन्द्रगुप्त' की मालविका, 'स्कंदगुप्त' की रामा, देवसेना आदि में राष्ट्रीयता की भावना नस–नस में व्याप्त हैं। जातीय गौरव, राष्ट्रीय प्रेम और विश्व कल्याण की कामना को स्थापित करने में प्रसाद के नाटकों की नारियाँ उल्लेखनीय हैं।

प्रसाद जी ने देशवासियों में आत्मगौरव और राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए भारत के स्वर्णिम अतीत को नाटकों का विषय बनाया। प्रसाद जी ने एक दर्जन नाटक लिखकर हिंदी नाटक साहित्य को समृद्ध किया। 'सज्जन','कल्याणी परिणय', 'करुणालय', 'प्रायश्चित', 'राज्यश्री', 'विशाख', 'अजातशत्रु', 'जनमेजय का नाग यज्ञ', 'स्कंदगुप्त', 'एक घूँट', 'कामना', 'चन्द्रगुप्त', तथा 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे नाटक लिखकर हिंदी साहित्य का गौरव बढाया। इनके नाटकों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक चेतना, इतिहास और कल्पना का सुंदर सामंजस्य दार्शनिक गंभीरता और साथ ही काव्यात्मक सरसता, वीरता और साहस व प्रेम का रोमानी संघर्षपूर्ण वातावरण, देशकाल का सजीव चित्रण आदि विशेषतायें इनके नाटकों में दृष्टव्य होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्रसाद जी के नाटकों की प्रशंसा अनेक विद्वानों ने की। डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है कि प्रसाद की ट्रेजडी की भावना, उनकी सांस्कृतिक पुनरुथान की चेतना, उनके महान कोमल चरित्र, उनके विराट मधुर दृश्य, उनका काव्य स्पर्श हिंदी में तो अद्वितीय है ही, अन्य भाषाओं और नाटकों की तुलना में भी उसकी ज्योति मलिन नहीं पड़ सकती है।'

बच्चन सिंह की धारणा है कि प्रसाद जी को इतिहास की अप्रतिहत परिवर्तन शीलता में अटूट विश्वास था। अपनी मर्मस्पर्शिनी प्रतिभा द्वारा प्रसाद जी ने समझ लिया कि अंतर्विरोधी राजकीय सत्ता, सामन्तीय परिपाटी एवं सम्राज्यवाद की दीवारें टूट रही हैं। नवीन मानवतावादी भावना उग रही है। प्रसाद जी ने अपने नाटकों की अन्य विशेषताओं के साथ उनके नाटकों में अपने युग की समस्या का प्रतिबिम्ब भी है। प्रसाद जी की राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में बच्चन सिंह जी कहते हैं कि इनकी राष्ट्रीयता राजाओं और सरदारों तक सीमित नहीं हैं, वह ऐसी राष्ट्रव्यापी चेतना है जो देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपने में समाहित कर लेती है । दूसरी, इनकी राष्ट्रीयता में विश्वमैत्री समन्वित है । यही कारण है कि स्थान–स्थान पर मानव मैत्री का उद्घोष हुआ है।

'चन्द्रगुप्त' में चन्द्रगुप्त और चाणक्य के संयुक्त प्रयास से मगध नन्द के अत्याचारों से मुक्ति पाता है। इस कथानक के माध्यम से देश की स्वतंत्रता तथा पीड़ा मुक्ति का वर्णन किया गया है। प्रसाद का ध्यान देश की सांस्कृतिक और राजनीतिक दुर्दशा की ओर अधिक था फिर भी आर्थिक संकट की ओर उनकी दृष्टि गई। 'स्कन्दगुप्त' में धातुसेन के कथन से विघटित अर्थ व्यवस्था का परिचय प्राप्त होता है – ''क्यों ब्राह्मण टुकड़ों के लिए अन्य लोगों की आजीविका छीन रहे हैं? क्यों एक वर्ग के लोग दूसरों की अर्थकारी वृत्तियों को ग्रहण करने लगे हैं? लोभ ने तुम्हारे धर्म का व्यवसाय चला दिया। धर्म वृक्ष के चारों ओर स्वर्ण के कांटेदार जाल फैलाए गए और व्यवसाय की ज्वाला से वह दाह्य हो रहा है। जिन धनवानों के लिए उसने धर्म को सुरक्षित रखा, उन्होंने समझा कि धर्म धन से खरीदा जा सकता है, इसीलिए धनोपार्जन मुख्य हुआ धर्म गौण।''

प्रसाद जी ने राष्ट्रीय–भावना के विकास के लिए सामाजिक कुरीतियों का संस्कार करना आवश्यक समझा। इस कार्य में दक्षता दिखाई है और सामाजिक कुरीतियों तथा संकीर्णताओं का यथार्थ चित्रण कर जनता को सभ्य तथा सुशिक्षित समाज के निर्माण की प्रेरणा दी। 'अजातशत्रु' में अवर्ण और सवर्ण की समस्या उठाई गई है। रानी शक्तिमती दासी पुत्री होने के कारण अपमानित की जाती है। रानी अपने पुत्र विरूदुक के अन्तर्गत आत्म–सम्मान और क्रांति के भाव जाग्रत करती है – ''बालक! मत्र अपनी इच्छा शक्ति और पौरूष से ही सब कुछ होता है। जन्मसिद्ध तो कोई भी अधिकार दूसरों के समर्थन का सहारा चाहता है। विश्वभर में छोटे से बड़ा होना यही प्रत्यक्ष नियम है।'

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अतः हम कह सकते है की भारतेंदु युग में जो नाटक रूप था, प्रसाद ने उसे परिष्कृत और प्रौढ़ता प्रदान की, प्रसाद के नाटकों में जो भावुकता, जो राष्ट्रीयता का पक्ष था और ऐतिहासिक परिवेश का जो जीवंत और व्यवस्थित निरूपण रहा वह प्रसादोत्तर सृजन में भी रहा। अध्येताओं का मत है कि प्रसाद के बाद जो नाटककार हुए, उनपर प्रसाद जी का प्रभाव भिन्न भिन्न रूप में परिलक्षित होता है।

प्रसाद की राष्ट्र दृष्टि में समानता के लिए भी स्थान है। वह सामाजिक समानता को राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते हैं। पर्णदत्त समाज में फैली घोर आर्थिक असमानता का विरोध करता है। प्रसाद चाहते हैं कि धन का संग्रहण एक व्यक्ति के पास न हो, वह समाज के उन तबकों तक पहुँचे जिन्हें इसकी आवश्यकता है। पर्णदत्त कहता है "अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें हमारे लिए, हम भूखों के लिए रख छोड़ा है। वह थाती है, उसे लौटाने में इतनी कुटिलता। विलास के लिए उनके पास पुष्कल धन है और दरिद्रों के लिए नहीं?" राष्ट्र को दिशा देने में युवाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जिस देश का युवा तत्पर एवं जागरूक नहीं होता वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता है। प्रसाद अपने देश के युवाओं में फैली उदासीनता से भी खिन्न दिखाई देते हैं। युवाओं को जागरूक करने का कार्य भी प्रसाद अपने इस नाटक के माध्यम से करते हैं। प्रसाद उन युवाओं को कोसते हैं जो केवल विलास में डुबे हुए हैं और देश की वर्तमान स्थिति के प्रति उन्मुख नहीं हैं। पर्णदत्त के माध्यम से प्रसाद ऐसे ही युवाओं को धिक्कारते हुए कहते हैं "नीच, दुरात्मा, विलास का नारकीय कीड़ा। बालों को संवारकर, अच्छे कपड़े पहनकर अब भी घमंड से तना हुआ निकलता है। कुलवधुओं का अपमान सामने देखते हुए भी अकड़कर चल रहा है, अब तक विलास और नीच वासना नहीं गयी। जिस देश के नवयुवक ऐसे हों, उसे अवश्य दूसरों के अधिकार में जाना चाहिए। देश पर यह विपत्ति, फिर भी यह निराली धज! युवाओं की इसी उदासीनता को प्रसाद, स्कंदगुप्त के माध्यम से कर्मक्षेत्र की ओर प्रेरित करते हैं। जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने पर जोर देते हैं। स्कंदगुप्त जो नाटक के प्रारम्भ में उदासीन रहता है, अंत तक आते–आते वह भी कर्मरत हो जाता है और कहता है "...इस संसार का कोई उद्देश्य है। इसी पृथ्वी को स्वर्ग होना है, इसी पर देवताओं का निवास होगा, विश्व नियंता का ऐसा ही उद्देश्य मुझे विदित होता है।"

राष्ट्रीय भावना से भरपूर स्कंदगुप्त नाटक प्रसाद के राष्ट्र दृष्टि की समुचित व्याख्या करती है। प्रसाद भारतवर्ष की सम्पूर्ण परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्र के विभिन्न तत्त्वों की समीक्षा करते हैं। उनकी राष्ट्र दृष्टि में स्पष्टता है। उन्हें जहाँ भी कमी दिखाई देती है वह, वहीं पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत कर उसकी आलोचना से भी नहीं हिचकते। उनकी संस्कृति के प्रति बहुत श्रद्धा है किन्तु, यह अंधश्रद्धा नहीं है। वे पहले तोलते है, फिर बोलते हैं। संस्कृति उनकी राष्ट्र दृष्टि की मूल है। उनका मानना है कि बिना संस्कृति के राष्ट्र दृष्टि

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 3, March- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

बन ही नहीं सकती है। संस्कृति से ही परम्पराएँ बनती हैं और परम्परा, आधुनिकता की आधारशिला होती है। प्रसाद विभिन्नता में एकता के समर्थक हैं। उनके राष्ट्र दृष्टि में एकता का महत्त्व है। इस नाटक में उन्होंने इस दृष्टिकोण को ही केन्द्र में रखा है। स्कंदगुप्त का समर्थन करने वाले पात्र केवल राजनीतिक स्वार्थ के लिए उसका समर्थन नहीं करते हैं। अपितु इसलिए करते हैं कि स्कंदगुप्त निष्पक्ष शासन करना जानता है। प्रसाद भी इसी निष्पक्षता का समर्थन करते हैं। बंधुवर्म्मा द्वारा अपने राज्य को गुप्त साम्राज्य में प्रसन्नतापूर्वक मिला देना, प्रसाद के उस विराट उद्देश्य को स्पष्ट करता है जिसमें कोई क्षेत्र, कोई जाति नहीं, केवल एक राष्ट्र है – भारतवर्ष जिसका विस्तार उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि भारतेन्दुकालीन राष्ट्रीय–भावना प्रसाद काल में आकर प्रखर और पुष्ट हो जाती है। प्रसाद के नाटकों से यह स्पष्ट है। सर्वत्र राष्ट्रीय उद्धार और उत्थान की कामना और प्रयास नाटकों में दिखाई देता है।

प्रसाद के नाटकों में एक बात सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है, कि इतिहास अब साहित्य की वस्तु बन गया। इतिहास का आश्रय ग्रहण कर देश की सांस्कृतिक आत्मा के उदार एवं परिष्कृत रूप की सफल अभिव्यक्ति प्रसाद ने की, जिससे आत्म सम्मान और राष्ट्रीय गौरव की अभिवृद्धि हुई। इनके माध्यम से समसामयिक समाज की ज्वलंत समस्याओं के समाधान की चेष्टा की गई। ये नाटक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रतिबिम्ब से प्रतीत होते हैं। अतः कह सकते हैं कि प्रसाद के नाटकों में आदर्श और मर्यादा के साथ–साथ देश भक्ति की डोर पकड़कर गतिमान होने वाली गौण नारी पात्रों में भी आम जनमानस को प्रभावित करने की विशेष क्षमता हैं।

भारतेंदु और प्रसाद युगीन मुख्य नाटकाकारों ने देशवासियों को प्रेरित करके नवजागरण के लिए जगाया। अपने नाटकों के पात्रों एवं संवादों से जनता में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। प्रायः इन नाटकों के चरित्र देश की आन, बान और शान की खातिर अपने प्राणों का बलिदान देते हुए नजर आते हैं। व्यक्ति बड़ा नहीं है, महान नहीं है बल्कि राष्ट्र महान है, का संदेश देते हुए इनके नाटकों में अतीत गौरव एवं व्यंग्य के चित्रण में राष्ट्रीय चेतना एवं देश भक्ति का स्वर प्रधान हैं।

अन्ततोगत्वा हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते है कि प्रसादजी तथा उनके समकालीन नाटककारों ने जिस राष्ट्रीय चेतना को अपनी कृतियों में समाहित और प्रकाशित किया है, वह आदि कवि बाल्मीकि के जननी जन्म भूमिश्च.... स्वर्गादपि गरियसी .... का ही विस्तार है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue **3**, Ma**rch**- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- साहित्यिक निबंध.. डॉ. गणपति 'चंद्रगुप्त... पृष्ठ... 737 और 738
- समीक्षात्मक निबंध... हरिचरण शर्मा....पृष्ठ... 297 और 298
- शोधगंगा.. भारतेंदु और प्रसाद युगीन सहोटी में राष्ट्रीय चेतना
- भारत के शक्ति के स्रोत
- वृहत निबंध साहित्य
- हिन्दी की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा.
- डॉ0 पद्मासिंह शर्मा, कमलेश का निबंध, प्रसाद का चन्द्रगुप्त, हिन्दी नाटक के सिद्धांत और नाटक
- ग्रंथ में संग्रहीत, पृ. 184
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 41
- प्रसाद, विशाख, पृ. 64
- प्रसाद, कामना, पृ. 97
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 122–123
- प्रसाद, अजातशत्रु, पृ. 56
- प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, पृ. 25
- प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, वाङमय, पृ. 775
- प्रसाद, विशाल, पृ. 14
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 123
- प्रसाद, चन्द्रगुप्त, पृ. 129
- प्रसाद, कामना, पृ. 92
- प्रसाद, जनमेजय का नागयज्ञ,
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 52
- प्रसाद, अजातशत्रु, पृ. 66
- प्रसाद, चन्द्रगुप्त, पृ. 58
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 125
- प्रसाद, स्कंदगुप्त, पृ. 130
- प्रसाद, जनमेजय का नागयज्ञ, पृ. 31